

अवधेश कुमार मौर्य

मुरैना, मध्यप्रदेश

चंबल घाटी गुनगुनाती, वीरता के गीत गाती

लिख रहा हूँ मैं कलम से, बस यही आराधना;
लिखना है जो भी लिखो, पर ना लिखो दुर्भावना|

हो कलम के साध्यवर तुम, लिखना ना परिहास को;
लिखना है तो ऐसा लिखो, जो याद रहे इतिहास को|

चंबल की कल-कल को लिखना,
निर्मल इसका जल लिखना,
लिखना तुम 'बिस्मिल' कहानी,
ममता का आँचल लिखना||

बिछुड़ी राखी बहन की लिखना,
बिटिया की गुड़िया लिखना;
आश बूढ़ी माँ की लिखना,
माथे की बिंदिया लिखना||

बूढ़े बाप की लाठी लिखना,
सौंधी माटी को लिखना;
लिखना तुम वो प्रेम कहानी,
दीपों की बाती लिखना||

बच्चों के सपनों को लिखना,
छूटे अपनों को लिखना;
लिखना उनकी अमर कहानी,
देशभक्ति उनकी लिखना||

कह रहा हूँ ककहरे से, शब्द बोझिल सुनहरे से;
स्मृति उनकी लिखना, जो लड़े थे दुश्मनों से||

चंबल घाटी गुनगुनाती, वीरता के गीत गाती;
वीर सपूतों की गाथाएं, आज हवाएं दोहराती||

लिखना तुम पनघट की बातें,
लिखना तुम मर्यादा को;
शब्दों में तुम जीवित रखना,
चंबल की हर गाथा को||

चंबल का हर कंकड़ लिखना,
निर्मल नील गगन लिखना;
माटी के हर एक कण में,
रीत यहाँ की तुम लिखना||

लिखना तुम बलिदानी माटी,
चंबल मान सदा लिखना;
वीर-प्रसूता इस धरती का,
तुम सम्मान सदा लिखना||

पढ़ें जो कोई शब्द तुम्हारे, आँखों में एक नूर रहे;
चंबल का पावन चरित्र, नभ-सा ही मग़रूर रहे|

शब्द समर्पित, भाव समर्पित, साँसों का सम्मान लिखो;
चंबल की हर गाथा में, तुम अपना 'हिंदुस्तान' लिखो|

लिख रहा हूँ मैं कलम से, बस यही आराधना;
जो भी लिखना है लिखो, पर ना लिखो दुर्भावना|